शोध मंथन Vol. XIII No.IV Oct.-Dec. 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.783 (SJIF)

स्ववित्तपोषित शिक्षा महाविद्यालयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन

प्राप्तिः 22.12.2022
स्वीकृतः 28.12.2022

107

डॉ० आशा यादव
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग
ओम स्ट्रलिंग ग्लोबल विश्वविद्यालय, हिसार

सुनैना
शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग
ओम स्ट्रलिंग ग्लोबल विश्वविद्यालय, हिसार
ईमेलः *sunainamit@gmail.com*

सारांश

कार्य अथवा नौकरी में सम्पूर्णता व आनन्द का वह अहसास जो किसी व्यक्ति को उसके कार्य (जॉब) से प्राप्त होता है, कार्य सन्तुष्टि कहलाता है। किसी भी संस्था के कर्मचारियों का संस्था के उत्थान में अहम् योगदान होता है। संस्था के प्रबंधकों का दायित्व होता है कि वे अपने कर्मचारियों की संन्तुष्टि की समीक्षा समुचित बनाये रखे। इसलिए शिक्षा महाविद्यालयों में अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। हिसार जिले के स्ववित्त पोषित शिक्षा महाविद्यालयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि का उनके अनुभव एवं शिक्षण विषयों के आधार पर अध्ययन करना मुख्य उद्देश्य है। शून्य परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु हरियाणा राज्य के हिसार और फतेहबाद जिले के स्ववित्तपोषित शिक्षा महाविद्यालयों के 36 महाविद्यालयों से 431 प्राध्यापकों (महिला+पुरूष) को यादृचिछक विधि से न्यादर्श में शामिल किये गये। 3. व्यवसाय सन्तुष्टि मापनीकार्य सन्तुष्टि मापनी : अमर सिंह तथा टी.आर. शर्मा द्वारा निर्मित उपकरण से प्रदत्तों को एकत्रित किया।मूल प्राप्तांको के विश्लेषण करने हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, एवं क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। मुख्य निष्कर्ष : स्ववित्त पोषित शिक्षा महाविद्यालयों के कला, विज्ञान, वाणिज्य एवं अन्य विषयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि के प्राप्तांकों के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।स्ववित्त पोषित शिक्षा महाविद्यालयों के 10 वर्ष से अधिक अनुभव के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि के प्राप्तांकों के मध्यमान, कम अनुभव वाले अध्यापकों की तुलना में अधिक पाया गया। अर्थात् शिक्षा महाविद्यालय के अध्यापकों में 10 वर्ष से अधिक अनुभव होने से उनकी कार्य सन्तुष्टि की मात्रा में अधिकता होती है। अनुभव में अधिकता से शिक्षा महाविद्यालयों के अध्यापकों में कार्य सन्तुष्टि अधिक पाई गई।

मुख्य बिन्दु

स्ववित्तपोषित शिक्षा महाविद्यालय, कार्य सन्तुष्टि, शिक्षण/अध्यापन विषय एवं अनुभव।

प्रस्तावना

किसी भी व्यवसाय में कर्मचारी की कार्य–सन्तुष्टि होना अत्यधिक आवश्यक एवं महत्वपूर्ण तथ्य है। कार्य–सन्तुष्टि व्यक्ति की मनोवषति को उसके कार्य को निर्देषित करता है। कार्य संतुष्टि तभी मिलती है जब आदमी वही करें जो वह चाहता है. परंतु आज प्रतिस्पर्धा का युग है, रोजगार का यह रूख हो गया है कि अच्छी योग्यता के बावजूद लोगों को टिकाऊ और उम्दा रोजगार नहीं मिल पा रहा है. फलस्वरूप वे ऐसे संगठनों में कार्य करने को तैयार हो जाते हैं जहाँ वे न कार्य से, न वेतन से संतुष्ट हो पाते हैं। इसके बावजूद पैसों के लालच में एक संगठन से दूसरे संगठन में जुड़ते रहना कभी भी कार्यसंतुष्टि प्रदान नहीं करता है। इसीलिये काम के प्रति रूझान, रूचि, जो अधिक प्रयास के लिए प्रेरित करते हैं तथा अपने साथ लाते हैं सफलता और कार्य संतुष्टि, इन सभी की कद्र करनी चाहिए तभी हम अपने कार्य से संतुष्ट हो सकते हैं। सर्वप्रथम Hoppock (1935) ने इस तथ्य की खोज की तथा समकालीन अध्ययनों के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि श्रमिकों की व्यवसाय के लिए उनकी उपयोगिता एवं व्यावसायिक आवश्यकताओं, इच्छाओं एवं आशंकाओं के मध्य जब समन्वय स्थापित होता तब कार्य–सन्तुष्टि का जन्म होता है। कार्य–सन्तुष्टि मनोवैज्ञानिक, शारीरिक तथा वातावरण सम्बन्धी परिस्थितियों के संयोग पर निर्भर करता है अर्थात जब व्यक्ति के व्यवसाय में मनोवैज्ञानिक, शारीरिक व वातावरण इन तीनों का मिलन होता है तब उसको अपने कार्य में पूर्णरूपेण सन्तुष्टि का अनुभव होता है (Mckimm & Swanwick, 2013)| वहीं शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि से हमारा तात्पर्य शिक्षकों की प्रारम्भिक आवश्यकताओं व अपेक्षाओं के अनुरूप कार्य की प्रकृति और उसका पारिश्रमिक प्राप्त होता है, जो एक शिक्षक को उस वषत्ति के रूप में स्वीकार करनी पड़ती है। यद्यपि शिक्षण को चिकित्सा व वकालात जैसे शास्त्रीय पेशों की श्रेणी में नहीं गिना जा सकता। क्योंकि इसका प्रमुख लक्ष्य देश के लिए सदनागरिक तैयार करना है। इसलिए शिक्षण वृत्ति सामाजिक मानकों व अपेक्षाओं पर आधारित माना जाता है। (Satisfied, 1996) यह एक विशिष्ट व अनूठी वृत्ति है, जिसकी कुछ निजी विशेषताएं हैं। यह एक सच है कि शिक्षक अपनी वृत्ति में प्रवेश से पूर्व दीर्घकालीन अधिगम की प्रक्रिया से गुजरता है। जिसमें वह विशिष्ट ज्ञान, प्रशिक्षण और कार्य अनुभव अर्जित करता है। शिक्षक–शिक्षार्थियों को अलग–अलग व्यक्तिगत तौर पर नहीं पढ़ाता, बल्कि कक्षाओं में सामूहिक तौर पर अन्तः क्रिया करता है। इस कारण यह भी तय नहीं किया जाता कि किसी शिक्षक का अपने विधार्थियों के समस्त विकास में कितना और कितनी दूर तक प्रभाव पड़ा? अंततः यह कहा जा सकता है कि शिक्षण अभी एक आभासी वृत्ति ही है जो वृत्तिकरण की प्रक्रिया से गुजर रही है, फिर भी निश्चित तौर पर यह कहा जा सकता है कि शिक्षण एक मिशन है, जिसमें प्रतिबद्धता या वचनबद्धता एक अनिवार्य तत्व है। जिसको शिक्षक अनदेखा नहीं कर सकते। सारांशतः बालकों का सर्वांगीण विकास ही उसकी वृत्ति है, इसलिए शिक्षक की वृत्ति के विकास की किसी भी योजना में भावनात्मक जुड़ाव को उपेक्षित नहीं किया जा सकता। (Xiaofu & Qiwen, 2007)

शिक्षा के क्षेत्र में 21वीं शताब्दी में भौतिकता का अत्यधिक विस्तार होने तथा ज्ञान के क्षेत्र की व्यापकता के कारण शिक्षा में तीव्र परिवर्तन हो रहा हैं जिससे अध्यापकों की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियां, उनका स्वयं का दायित्व और अध्यापन कार्य संतोष तीनों ही प्रभावित हो रहे हैं। ऐसे

अनेक संगठनात्मक कारक होते हैं जिनके कारण एक व्यक्ति को कार्य सन्तुष्टि प्राप्त हो सकती है। उदाहरण के लिए कार्य अथवा नौकरी में भविष्य में मिलने वाले अवसर (Opportunites), कार्य की प्रकति (Nature of the Job), संगठन की नीतियाँ (Policies), कार्य परिस्थितियों की नीतियाँ, पदोन्नति के लिए भगतान आदि। प्रभावी पदोन्नति (योग्यता बनाम वरिष्ठता), विदेशी कार्य, छंटनी तथा पुरस्कार प्रणाली आदि संगठनात्मक नीतियों एवं प्रक्रियाओं से भी कार्य सन्तुष्टि प्राप्त होती है। कार्यकारी परिस्थितियाँ (Working Conditions) एक कर्मचारी के काम की परिस्थितियाँ, शारीरिक आराम के साथ संगत है और कार्य सन्तुष्टि में योगदान करती है। यदि कार्य स्थल का तापमान (Temperature), आर्द्रता (Humidity) संवातन (Ventilation), प्रकाश व्यवस्था (Lighting Arrangement), शोर (Noise), पर्याप्त कार्यस्थल एवं उपकरण (Adequate Space and Eauipments), सफाई आदि अनुकूल है तो कर्मचारी को सुखद अहसास होगा और उसकी कार्य के प्रति सन्तुष्टि बढ़ेगी। समूह कारक (Group Factors)–समूह का आकार (Size of Group) तथा पर्यवेक्षण (Supervision) दो ऐसे समूह कारक है जो कार्य के प्रति कर्मचारी की सन्तुष्टि को प्रभावित करते हैं। कार्य में उनकी रुचि होने के कारण वह अपने कार्य की पूरी निष्ठा से करने का प्रयास करते हैं। ब्लम तथा नेलर के अनुसार– ''कार्य संतुष्टि शिक्षक की उन अभिवृत्तियों का परिणाम हैं, जिन्हें वह अपने कार्य या व्यवसाय से सम्बन्धित अनेक कारकों एवं सामान्य जीवन के प्रति बनाए रखता है। ''अध्यापन कार्य संतुष्टि अध्यापक के लिए एक प्रकार की अभिप्रेरणा है। जिसके फलस्वरुप अध्यापक अपना कार्य सम्पादित करने में आनन्द की अनुभूति करता है। यह कार्य संतुष्टि केवल व्यैक्तिक स्तर तक सीमित होता है। इसकी व्याख्या सामूहिक रुप से नहीं की जा सकती है। क्योंकि कार्य संतुष्टि किसी अध्यापक में अंतनिर्हित उन सभी मनोवृत्तियों का परिणाम होता है, जिसे अध्यापक अपने अध्यापन व्यवसाय से जीवन काल में बनाए रखने का प्रयास करता है। विक्टर एच. रूम के अनुसार– ''एक अधिक संतुष्ट कर्मचारी अपने कार्य को अन्य से अधिक कुशलता के साथ सम्पादित करता है तथा इसी के साथ उसकी व्यवसाय के प्रति पलायन मानसिकता नगण्य होती है।'' (Klein & Blomeke, 2013)

सामान्यतः जब शिक्षक अपने कार्य से सन्तुष्ट होता है तो वह अधिक उत्पादन एवं कार्यक्षमता द्वारा इस संतुष्टि को प्रकट करता है। किन्तु आवश्यक रूप में संतुष्टि कार्य निश्पादन की बढ़ोत्तरी के रूप में प्रकट हो यह आवश्यक नहीं है। किन्तु कार्य संतुष्टि तथा कार्य निश्पादन में प्रत्यक्ष सम्बन्ध न होते हुए भी कर्मचारी द्वारा संतोष का अनुभव अन्य प्रकार से भी लाभकारी हो सकता है। प्रबन्धकों के विचार से संतुष्ट शिक्षक असंतुष्ट शिक्षक से कहीं अधिक लाभदायक होता है इस अध्ययन से अध्यापकों में कार्य सन्तुष्टि में आने वाले कमियों को ध्यान में रखकर आगे की योजनाओं को इस प्रकार से बनाने के सुझाव दिये जायेंगे जिनसे उनके शिक्षण को ओर अधिक प्रभावी बनाया जा सके। जिससे वे देश के लिए अधिक से अधिक सशक्त शिक्षक तैयार कर सके।

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दावली कार्य संतुष्टि की व्याख्या

''कार्य संतुष्टि एक शिक्षक का वह दृष्टिकोण है जिसके द्वारा वह अपने व्यवसाय के बाह्य तथा आंतरिक सामाजिक सम्बन्धों तथा सामान्य समायोजन का अपनी पसंद, तथा सकारात्मक तथा नकारात्मक अनुभवों के बीच संतुलन स्थापित करता है।'' अध्ययन में कार्य संतुष्टि के निम्नलिखित पक्षों पर प्रकाश डाला जायेगा हैः–

1. ठोस कार्य संतुष्टि।
2. कार्य की सूक्ष्मता की संतुष्टि।
3. मनो–सामाजिक कारकों में संतुष्टि।
4. वेतन संतुष्टि/आर्थिक संतुष्टि
5. समुदाय उन्नमुखता संतुष्टि।

आदि पक्षों के सम्पूर्ण योग के प्राप्तांकों के आधार पर किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. स्ववित्तपोषित शिक्षा महाविद्यालयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्यापन विषयों के सन्दर्भ में अध्ययन करना।
2. स्ववित्तपोषित शिक्षा महाविद्यालयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि का अनभुव के सन्दर्भ में अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएं

1. स्ववित्तपोषित शिक्षा महाविद्यालयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्यापन विषयों के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. स्ववित्तपोषित शिक्षा महाविद्यालयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्यापन विषयों के सन्दर्भमें कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध का परिसीमन :– प्रस्तुत शोध का भौगोलिक सीमाकन हरियाणा राज्य के हिसार और फतेहबाद जिले के स्ववित्तपोषित शिक्षा महाविद्यालयों के अध्यापकों को शामिल किया गया है। जिनमें 36 महाविद्यालयों के 431 प्राध्यापकों (महिला+पुरूष) को यादृचिछक विधि से न्यादर्श का जनसाख्यिकीय विस्तार रिहायसी क्षेत्र एवं लिंग के आधार पर किया है।

शोधविधि :– शोध की प्रकृति विवरणात्मक शोध की है। सर्वेक्षण विधि की उपयोगिता के आधार पर आँकड़ों के एकत्रीकरण हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। समष्टि में हरियाणा के पश्चिमी जिलों में हिसार एवं फतेहाबाद के निजी शिक्षा महाविद्यालयों के प्राध्यापकों को रखा है। जिसमें से 431 शिक्षक प्रशिक्षकों को यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग कर न्यादर्श में शामिल किया है।

शोध उपकरण :–3. व्यवसाय सन्तुष्टि मापनीकार्य सन्तुष्टि मापनी : अमर सिंह तथा टी. आर. शर्मा (Singh & Sharma, 1999)

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :–प्रस्तुत अध्ययन में परीक्षणों के मूल प्राप्तांको का विश्लेषण करने हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, एवं क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई।

आंकड़ों का सारणीयन एवं विश्लेषण

$H_0 1$ = हरियाणाराज्य के स्ववित्त पोषित शिक्षा महाविद्यालयों के कला, विज्ञान, वाणिज्य एवं अन्य विषयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका सं.1

स्ववित्त पोषित शिक्षा महाविद्यालयों के कला, विज्ञान, वाणिज्य एवं अन्य विषयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि के सम्पूर्ण योग के प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन की गणना

विषयकों का समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
कला	239	73.33	15.089
विज्ञान	87	71.86	14.679
वाणिज्य	53	69.53	14.487
अन्य विषय	50	69.54	15.283

तालिका संख्या 1. स्ववित्त पोषित शिक्षा महाविद्यालयों के कला, विज्ञान, वाणिज्य एवं अन्य विषयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि के सम्पूर्ण योग के प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन की गणना की गई है। स्ववित्त पोषित शिक्षा महाविद्यालयों के कला, विज्ञान, वाणिज्य एवं अन्य विषयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 73.33, 71.86,69.53 & 69.54 तथा मानक विचलनः 15.089, 14.679, 14.487, 15.283 दर्शाया गया है। स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के कला, विज्ञान, वाणिज्य एवं अन्य विषयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि के प्राप्तांकों के मध्यमानों में अन्तरों की सार्थकता हेतु एफ परीक्षण की गणना अग्रतालिका में की गई है।

तालिका सं. 2

स्ववित्त पोषित शिक्षा महाविद्यालयों के कला, विज्ञान, वाणिज्य एवं अन्य विषयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि के प्राप्तांकों के मध्यमानों में अन्तरों की सार्थकता की गणना हेतु एफ परीक्षण

कार्य सन्तुष्टि के आयाम	प्राप्तांकों का समूह	वर्गों का योग	df	Mean Square	F	Sig.
कार्य सन्तुष्टि	Between Groups	1047.258	3	349.086	1.560	.198
	Within Groups	95077.194	425	223.711		
	Total	96124.452	428			

उपरोक्त तालिका संख्या 2. स्ववित्त पोषित शिक्षा महाविद्यालयों के कला, विज्ञान, वाणिज्य एवं अन्य विषयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि के प्राप्तांकों के मध्यमानों में अन्तरों की सार्थकता की गणना में एफ परीक्षण (एक मार्ग–प्रसरण विश्लेषण) 1.560 (df=3,425) असार्थक पाया गया। प्रायिकता मान .198 सार्थकता मान 0.05से अधिक पाया गया। इसलिए पूर्व निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं होती है। अतः स्ववित्त पोषित शिक्षा महाविद्यालयों के कला, विज्ञान, वाणिज्य एवं अन्य विषयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि के प्राप्तांकों के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

$H_0$2 = हरियाणा राज्य के स्ववित्त पोषित शिक्षा महाविद्यालयों के अध्यापकों की उनके अनुभव के सन्दर्भ में उनकी कार्य सन्तुष्टि का उनके अनुभव के सन्दर्भ में मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका सं.3

स्ववित्त पोषित शिक्षा महाविद्यालयों के अध्यापकों की उनके अनुभव के सन्दर्भ में उनकी कार्य सन्तुष्टि के प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन की गणना

अध्यापकों का समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
5 वर्ष से कम अनुभव	134	70.61	15.588
5 से 8 वर्ष का अनुभव	8	65.75	15.229
10 वर्ष का अनुभव	179	71.63	13.895
10 वर्ष से अधिक	108	75.29	15.607

तालिका संख्या 3. स्ववित्त पोषित शिक्षा महाविद्यालयों के अध्यापकों की उनके अनुभव के सन्दर्भ में उनकी कार्य सन्तुष्टि के प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन की गणना की गई है। स्ववित्त पोषित शिक्षा महाविद्यालयों के अध्यापकों की उनके अनुभव के सन्दर्भ में उनकी कार्य सन्तुष्टि के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 70.61, 65.75,71.63 & 75.29 तथा मानक विचलनः 15.588, 15.229, 13.895, 15.607 दर्शाया गया है। स्ववित्त पोषित शिक्षा महाविद्यालयों के अध्यापकों की उनके अनुभव के सन्दर्भ में उनकी कार्य सन्तुष्टि के प्राप्तांकों के मध्यमानों में अन्तरों की सार्थकता हेतु एफ परीक्षण की गणना अग्रतालिका में की गई है।

तालिका सं. 4

स्ववित्त पोषित शिक्षा महाविद्यालयों के अध्यापकों की उनके अनुभव के सन्दर्भ में उनकी कार्य सन्तुष्टि के सम्पूर्ण आयामों के योग के प्राप्तांकों के मध्यमानों में अन्तरों की सार्थकता की गणना हेतु एफ परीक्षण

कार्य सन्तुष्टि के आयाम	प्राप्तांकों का समूह	वर्गों का योग	df	Mean Square	F	Sig.
कार्य सन्तुष्टि का योग	Between Groups	1755.365	3	585.122	2.635	.049
	Within Groups	94369.088	425	222.045		
	Total	96124.452	428			

उपरोक्त तालिका संख्या 4. स्ववित्त पोषित शिक्षा महाविद्यालयों के अध्यापकों की उनके अनुभव के सन्दर्भ में उनकी कार्य सन्तुष्टि के प्राप्तांकों के मध्यमानों में अन्तरों की सार्थकता की गणना में एफ परीक्षण (एक मार्ग–प्रसरण विश्लेषण) 2.635 (df=3,425) सार्थक पाया गया। प्रायिकता मान .049 सार्थकता मान 0.05 से कम पाया गया। इसलिए पूर्व निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः स्ववित्त पोषित शिक्षा महाविद्यालयों के अध्यापकों की उनके अनुभव के सन्दर्भ में उनकी कार्य सन्तुष्टि के प्राप्तांकों में मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया है। विभिन्न समूहों की मध्यमान तालिका का अवलोकन करने पर पाया कि स्ववित्त पोषित शिक्षा महाविद्यालयों के 10 वर्ष से अधिक अनुभव के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि के प्राप्तांकों के मध्यमान, कम अनुभव वाले अध्यापकों की तुलना में अधिक पाया गया। अर्थात् शिक्षा महाविद्यालय के अध्यापकों में 10 वर्ष से अधिक अनुभव होने से उनकी कार्य सन्तुष्टि की मात्रा में अधिकता होती है। वहीं 5 से 8 वर्ष के अनुभव वाले शिक्षा महाविद्यालयों के अध्यापकों में कार्य सन्तुष्टि के प्राप्तांकों का मध्यमान सबसे कम पाया गया अर्थात् इस अनुभव वर्ग के अध्यापकों में कार्य सन्तुष्टि का स्तर कम होता है।

निष्कर्ष की उपयोगिता

1. स्ववित्त पोषित शिक्षा महाविद्यालयों के कला, विज्ञान, वाणिज्य एवं अन्य विषयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि के प्राप्तांकों के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
2. स्ववित्त पोषित शिक्षा महाविद्यालयों के 10 वर्ष से अधिक अनुभव के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि के प्राप्तांकों के मध्यमान, कम अनुभव वाले अध्यापकों की तुलना में अधिक पाया गया। अर्थात् शिक्षा महाविद्यालय के अध्यापकों में 10 वर्ष से अधिक अनुभव होने से उनकी कार्य सन्तुष्टि की मात्रा में अधिकता होती है। अनुभव में अधिकता से शिक्षा महाविद्यालयों के अध्यापकों में कार्य सन्तुष्टि अधिक पाई गई।
3. वहीं 5 से 8 वर्ष के अनुभव वाले शिक्षा महाविद्यालयों के अध्यापकों में कार्य सन्तुष्टि के प्राप्तांकों का मध्यमान सबसे कम पाया गया अर्थात् इस अनुभव वर्ग के अध्यापकों में कार्य सन्तुष्टि का स्तर कम होता है।

सन्दर्भ

1. Ali, M.A. (2011). A study of the Job Satisfaction of secondary school teachers. *Journal of education and practice, International Institute for Science, Technology & Educator.* Vol.2(1).
2. Klein, P., Blomeke, S. (2013). When is a School Environment Perceived As Supportive By Beginning Mathematics Teachers/ ? Effect of Leadership, Trust, Autonomy and Apppraisal on Teaching Quality. *International Journal of Science and Mathematics Education*. 2*5*. Pg. **1029–1048.**
3. Kumar, A., Kumar, L. (2017). The Effectiveness of Computer Assisted Instruction on Science Achievement of Secondary School Students. *Learning Community-An International Journal of Educational and Social Development. 8*(2). Pg. **75.** https://doi.org/10.5958/2231-458x.2017.00012.4.
4. Mckimm, J., Swanwick, T. (2013). Educational Leadership. *Understanding Medical Education: Evidence, Theory and Practice: Second Edition*. Pg. **473–491.** https://doi.org/10.1002/9781118472361.ch33.
5. Satisfied, D.D. (1996). The Teacher Motivation and Job Satisfaction Survey. *Journal ofUndergraduate Sciences*. *3*(Fall). Pg. **147–154.**
6. Singh, A., Sharma, T.R. (1999). Job satisfaction scale. *Agra: National Psychological Corporation*.
7. Xiaofu, P., Qiwen, Q. (2007). An Analysis of the Relation Between Secondary School Organizational Climate and Teacher Job Satisfaction. *Chinese Education & Society*. *40*(5). Pg. **65–77.** https://doi.org/10.2753/CED1061-1932400507.